International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 8, August 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

उच्च शिक्षा एवं संचार क्रांति : एक विश्लेषण

डॉ.सत्येन्द्र प्रताप सिंह

वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रतिस्पर्धी युग में मानव के सम्पूर्ण विकास तथा स्थायित्व को बनाये रखने के लिए विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल की जरूरत है, जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा वास्तव में जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा शब्द अंग्रेजी के Education (एजुकेशन) का हिन्दी रूपान्तर है, जो लैटिन के 'एजुकेटम' से बना है जिसका तात्पर्य है आगे की ओर बढ़ना। वास्तव में शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

वस्तुतः मानवीय सभ्यता के विकास का आधार का आध शिक्षा ही है। शिक्षा के बिना किसी राष्ट्र एवं सभ्यता के विकास की बात ही बेमानी है। कोई भी देश भौतिक संसाधनों से चाहे जितना भी समृद्ध हो, यदि वह शैक्षिक दृष्टि से समृद्ध नहीं है तो विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती।वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास ने मानव जीवन को बहुविध रूप में प्रभावित किया है और मानव को पृथ्वी लोक से आकाशीय लोक तक की यात्रा को शुगम बनाया है तथा विविध प्रकार के रहस्यों का उद्घाटन कर मानव की जिज्ञासाओं की शांति में महती भूमिका निभाई है। शिक्षा के माध्यम से हम ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यापक विकास करके मानवीय सभ्यता को विकास की नयी ऊँचाईयों तक ले जा सकने में समर्थ हुए हैं, तो दूसरी ओर वैज्ञानिक विकास ने ग्लोबल विलेज की संकल्पना को साकार किया है।

भारत में उच्च शिक्षा जिसमें विश्वविद्यालयी एवं मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा माध्यम शामिल है।[1] चाहे नामांकन के स्तर पर हो अथवा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात हो दोनों स्तरों पर उच्च शिक्षा की अवस्था सुखद नहीं कही जा सकती है। स्मरणीय है कि भारत में उच्च शिक्षा यू.एस.ए. तथा चीन के बाद तीसरा स्थान रखता है। एक सर्वे के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकन 24.5 प्रतिशत जिसमें पुरूष नामांकन 25.4 प्रतिशत तथा महिला नामांकन 23.5 प्रतिशत है।[2] जबकि भारत में 2030 तक सकल नामांकन दर 30

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया। गुणवत्ता के स्तर पर देखें तो नैक का शोध बताता है कि भारत में 90 प्रतिशत कालेज एवं 70 प्रतिशत विश्वविद्यालय का गुणात्मक स्तर बेहद कमजोर है, इसलिए हमारी सरकार 'शिक्षा को सभी के लिए' सुलभ बनाने हेतु शिक्षा को एक अन्य माध्यम के तौर पर डिस्टेन्स एजूकेशन के विकास पर जोर दे रही है।

तकनीकी एवं विज्ञान की खोजों ने युगान्तकारी परिवर्तनों को साकार रूप दिया है, जिसने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में विकास का नया प्रतिमान प्रस्तुत किया है। शिक्षा एवं संचार की बढ़ती महत्ता ने मानव जीवन को बहुविध रुप से प्रभावित किया है और वर्तमान वैश्वीकरण के युग में सामान्य से सामान्य व्यक्ति के लिए भी ज्ञान के द्वार खोल दिए हैं।

वास्तव में शिक्षा ही वह कारक है जो समाज के सबसे निचले तबके तक को भी प्रभावित किया है। कक्षा–कक्ष अध्ययन की परम्परागत प्रणाली में भी तकनीकी विकास के कारण बहुआयामी परिवर्तन हुए हैं, यथा–श्रव्यदृश्य साधनों के उपयोग ने स्मार्ट क्लास की संकल्पना को साकार रूप दिया है तथा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में महती भूमिका निभाई है। तकनीकी तथा संचार के साधनों ने बिना शिक्षक के भौतिक उपस्थिति के भी शिक्षक की प्रत्यक्ष भूमिका को साकार रूप दिया है और एक साथ बहुत से विद्यालयों, संस्थाओं में एक ही समय में एक ही प्रकार का ज्ञान एवं सूचना एक ही शिक्षक द्वारा प्रदान किया जाना शुलभ हो सका है।

उच्च शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में देखें तो यह कहना सर्वथा समीचीन होगा कि वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार तथा सर्वशुलभ करने में संचार क्रांति की भूमिका केन्द्रीय दिखाई देती है। चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक शिक्षा हो, सभी क्षेत्रों में तकनीकी एवं संचार ने महती भूमिका निभायी है। तकनीकी एवं संचार क्रान्ति ने परम्परागत शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग द्वारा मूल्यांकन प्रणाली को नवीन रूप प्रदान किया है। उच्च शिक्षा के अन्तर्गत मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा वास्तव में संचार एवं तकनीकी के विकास के कारण ही शुलभ एवं प्रभावी रूप ग्रहण कर सका है। ए. आई. एस. एच. ई. के अनुसार उच्च शिक्षा में दाखिल छात्रों में से 11.05 प्रतिशत छात्र मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के अर्न्तगत शामिल है। इनमें से 53.7 प्रतिशत पुरूष, 46.3 प्रतिशत महिला नामांकन है।[3] राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित तंत्र के सृजन, विनियामक तंत्रों में गुणात्मक सुधार, वेव आधारित साझा मुक्त संसाधन विकसित करना, राष्ट्रीय सेवा की उपलब्धता

सुनिश्चित करना आदि पर बल दिया। आयोग के अनुसार बेहतर विषयवस्तु का निर्माण एवं वैश्विक मुक्त ज्ञान संसाधनों का लाभ उठाने की ओर व्यापक ढंग से ध्यान आकृष्ट किये जाने की जरूरत है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 100 दिनों का एजेण्डा प्रस्तुत करते हुए शिक्षा विस्तार, निवेश तथा गुणवत्ता को मूलमंत्र बताया। 15 जुलाई, 2015 को 'स्किल इण्डिया मिशन' का शुभारम्भ उसी की एक कड़ी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में, "कौशल विकाश योजना, केवल जेब में रुपये भरना ऐसा नहीं है, बल्कि गरीबों के जीवन को आत्म विश्वास से भरना है।" मंत्रालय के अनुसार वर्तमान विश्व में उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण आये बदलावों को देखते हुए शिक्षा के लक्ष्य एवं उसकी आवश्यकताओं में परिवर्तन आ गया है। सरकार का फोकस है कि शिक्षा को सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाये तथा ऑनलाइन शिक्षा पर बल दिया जाये, इसके माध्यम से घर बैठे छात्र कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकें। भरतीय संदर्भ विशेष में देखें तो शिक्षा को व्यापक आधार प्रदान करने के लिए दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा पर बल दिया जाना होगा जिससे कि भारत के बड़े क्षेत्र को शिक्षा से जोड़ा जा सके, जिसमें सूचना तथा संचार के साधनों, यथा–कम्प्यूटर, इण्टरनेट, रेडियो प्रसारण, टेलीविजन, श्रव्य–दृश्य साधनों आदि का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

1995 में इण्टरनेट के विकास के साथ शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुलभता के साथ प्रभावी अधिगम की प्रक्रिया को गति मिली। ज्ञानवाणी तथा ज्ञानदर्शन जैसे शैक्षिक प्रसारणों ने शिक्षा में गुणवत्ता तथा संवर्द्धन के साथ समस्या समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सन्दर्भ में देखें तो सम्पूर्ण विश्व के अधिकांश विकासशील देशों ने मुक्त शिक्षण संस्थाओं की आवश्यकता पर बल दिया है। जहाँ एक ओर फ्रांस तथा यू. के जैसे विकसित देशों ने दूरस्थ शिक्षा का मार्ग प्रशस्त्र किया है वहीं इंटरनेट आधारित ऑनलाईन शिक्षा के सन्दर्भ में अमेरिका अग्रणी देश बनकर उभरा है। भारत के भविष्य का बेहतर निर्माण हो सके इसके लिए जरूरी है कि उच्च शिक्षा को सुगम बनाकर नामांकन दर को बढ़ाने के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल दिया जाये, जिसमें तकनीकी तथा संचार के साधनों की भूमिका प्रभावी सिद्ध होगी और भारत विश्व गुरू के सपने को साकार करने में सक्षम बन सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1.ऑल इण्डिया सर्वे ऑन हायर एजूकेशन, 2015–16

रिस्पान्स ऑफ यूनिवर्सिटीज ड्यूरिंग–2015–16

टाईप ऑफ यूनिवर्सिटी	नं0 ऑफ यूनिवर्सिटीज	नं0 ऑफ रिस्पान्स
सेंट्रल ओपेन यूनिवर्सिटी	1	1
सेंट्रल यूनिवर्सिटी	43	41
राजकीय डीम्ड यूनिवर्सिटी	32	32
इस्टीट्यूट अंडर स्टेट लेजिस्लेचर ऐक्ट	5	4
इन्स्टीयूट ऑफ नेशनल इम्पारटेंस	75	74
डीम्ड यूनिवर्सिटी–प्राइवेट	79	79
स्टेट प्राइवेट यूनिवर्सिटी	197	182
स्टेट ओपेन यूनिवर्सिटी	13	13
स्टेट पब्लिक यूनिवर्सिटी	329	329
स्टेट प्राइवेट ओपेन यूनिवर्सिटी	1	1
डीम्ड विश्वविद्यालय गवर्नमेंट एडेड	11	11
अन्य	13	10
कुल योग	799	774

2. ऑल इडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन, 2015–16, अध्याय–2, पृ0 24।
3. पूर्णेक्त, प्रस्तावना, पृ0 4